भारतीय अर्थव्यवस्था पर स्टार्टअप्स का प्रभाव

डॉ. शिल्पा गुप्ता

अतिथि विद्वान (वाणिज्य)
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा (म.प्र.)

सारांश

भारत को सालाना 10 करोड़ से अधिक नौकरियों की जरूरत है और जो नौकरियां पैदा होती हैं वे ज्यादातर स्टार्टअप से होती हैं न कि बड़े उद्यमों से। स्टार्टअप उद्यमिता महत्वपूर्ण है क्योंकि यह कारोबारी माहौल और उद्यमों में नए नवाचार, नई नौकरियां और प्रतिस्पर्धी गतिशीलता भी लाती है। आज की दुनिया में आर्थिक समृद्धि में स्टार्टअप्स की भूमिका बढ़ रही है। स्टार्टअप के मुख्य लाभों में से एक यह है कि यह नई नौकरियां पैदा करता है। वैश्विक डेटा से पता चलता है कि बड़ी कंपनियों या उद्यमों की तुलना में स्टार्टअप हमारे देश में अधिक रोजगार पैदा कर रहे हैं। अब तक, कई स्टार्टअप ने नवीनतम तकनीक आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, और रोबोटिक्स आदि पेश किए हैं। अधिकांश प्रौद्योगिकी दिग्गज कंपनियां अपने कार्यों को स्टार्टअप को आउटसोर्स करती हैं। इससे स्टार्टअप्स के कैश फ्लो को बढ़ाने में भी मदद मिलेगी। जिम्मेदारी के महत्व को ध्यान में रखते हुए कि भारतीय स्टार्टअप को भारतीय अर्थव्यवस्था के विस्तार में खेलने के लिए आवंटित किया जाता है। स्टार्टअप्स के माध्यम से प्राप्त टर्नओवर और बड़ी संख्या में नौकरियां जो स्टार्टअप्स की सुविधा के द्वारा बनाई जा सकती हैं, यहां तक कि मार्केट कंट्रोलर सिक्योरिटीज एंड एक्सचेंज बोर्ड ऑफ इंडिया (सेबी), स्टार्टअप रेगुलेशन के उपयोग में आसानी ने स्टार्टअप के लिए बाजार फंड के प्रवाह को सुविधाजनक बनाया । यह शोध पत्र स्टार्टअप्स के प्रभाव, स्टार्टअप की वृद्धि, स्टार्टअप्स के इकोसिस्टम का विश्लेषण और भारतीय अर्थव्यवस्था पर इसके प्रभाव और अर्थव्यवस्था की वृद्धि का विश्लेषण करेगा।

स्टार्टअप्स इंडिया पहल की उपलब्धि

स्टार्टअप इंडिया भारत सरकार की एक प्रमुख पहल है जिसका उद्देश्य देश में स्टार्टअप्स और नये विचारों के लिए एक मजबूत पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करना है जिससे देश का आर्थिक विकास हो एवं बड़े पैमाने पर रोजगार के अवसर उत्पन्न हों। स्टार्टअप एक इकाई है, जो भारत में पांच साल से अधिक से पंजीकृत नहीं है और जिसका सालाना कारोबार किसी भी वित्तीय वर्ष में 25 करोड़ रुपये से अधिक नहीं है। यह एक इकाई है जो प्रौद्योगिकी या बौद्धिक सम्पदा से प्रेरित नये उत्पादों या सेवाओं के नवाचार, विकास, प्रविस्तारण या व्यवसायीकरण की दिशा में काम करती है। सरकार द्वारा इस संबंध में घोषित कार्य योजना स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र के सभी पहलुओं को संबोधित करने और इस आंदोलन के प्रसार में तेजी लाने की उम्मीद करती है। स्टार्ट–अप एक्शन प्लान मुख्य रूप से इन तीन बृहद भागों में विभाजित है :–

1. सरलीकरण और प्रारंभिक सहायता 2.समर्थन और प्रोत्साहन अनुदान
3. उद्योग–शैक्षिकजगत (एकेडेमिया) भागीदारी और उद्भवन

स्टार्टअप भारत के घटक सरलीकरण और प्रारंभिक सहायता

➢ **स्व–प्रमाणन पर आधारित अनुपालन व्यवस्था –** इसका उद्देश्य स्टार्टअप्स पर नियामक का बोझ कम करना है ताकि वे अपने मुख्य कारोबार पर ध्यान केन्द्रित कर सकें और अनुपालन की लागत कम रख सकें। नियामक व्यवस्थायें इस प्रकार और सरल एवं लचीली होंगी तथा निरीक्षण और अधिक सार्थक एवं सरल होगा।

➢ **स्टार्टअप इंडिया हब –** पूरे स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र के लिए एक संपर्क स्थान का निर्माण जिससे ज्ञान का आदान–प्रदान एवं वित्त पोषण हो सकें। सरकार मुख्य हितधारक होगी एवं कें तथा राज्य सरकारों, भारतीय और विदेशी पूंजीपतियों, एंजेल नेटवर्क, बैंकों, इन्क्यूबेटरों, कानूनी भागीदारों, सलाहकारों, विश्वविद्यालयों और अनुसंधान एवं विकास संस्थानों के साथ मिलकर काम करेगी।

➢ **मोबाइल एप्लिकेशन और पोर्टल का रॉल आउट –** सरकार और नियामक संस्थानों के साथ स्टार्टअप्स के लिए एक इंटरैक्टिव मंच के रूप में कार्य करेगा। 1 अप्रैल, 2016 से यह सभी प्रमुख मोबाइल/स्मार्ट डिवाइस प्लेटफार्मों पर उपलब्ध कराया जाएगा।

➢ **कानूनी सहायता और कम दर पर पर तेजी से पेटेंट परीक्षण –** बौद्धिक संपदा अधिकार को बढ़ावा देने और जागरूकता लाने एवं नये स्टार्टअप्स के सतत विकास और तरक्की को सुनिश्चित करने के लिए, यह योजना पेटेंट दाखिल करने के कार्य को आसान कर देगा।

➢ **स्टार्टअप्स के लिए सार्वजनिक खरीद के शिथिलीकृत मानदंड –** इसका उद्देश्य अनुभवी कंपनियों की तुलना में स्टार्टअप्स के लिए समान अवसर प्रदान करना है। सरकार या सार्वजनिक उपक्रमों के द्वारा जारी निविदाओं के मामले में गुणवत्ता मानकों में छूट के बिना स्टार्टअप्स को ''पूर्वानुभव/टर्नओवर'' के मानदंडों में छूट दी जाएगी।

➢ **स्टार्टअप्स के लिए त्वरित निकासी –** यह कार्य योजना स्टार्टअप्स के लिए असफलता की स्थिति में संचालन को बंद करने में आसानी प्रदान करेगा। स्टार्टअप्स के लिए एक इंसोल्वेंसी प्रोफेशनल प्रदान किया जाएगा जो छह महीने के समय में लेनदारों के भुगतान के लिए कंपनी की आस्तियों को बेचने का प्रभारी होगा। यह प्रक्रिया सीमित देयता की अवधारणा को स्वीकार करेगी।

समर्थन और प्रोत्साहन अनुदान

➢ **स्टार्टअप्स के लिए धन की व्यवस्था –** सरकार प्रति वर्ष 2500 करोड़ रुपये की एक प्रारंभिक निधि और 4 साल की अवधि में कुल 10,000 करोड़ रुपये की निधि की स्थापना करेगी।

➢ **स्टार्टअप्स के लिए क्रेडिट गारंटी –** स्टार्टअप्स के लिए वेंचर ऋण उपलब्ध कराने के लिए बैंकों और अन्य उधारदाताओं को प्रोत्साहित करने के लिए, राष्ट्रीय क्रेडिट गारंटी ट्रस्ट कंपनी (NCGTC) के माध्यम से क्रेडिट गारंटी तंत्र / सिडबी द्वारा प्रति वर्ष 500 करोड़ के

बजट का प्रावधान अगले चार साल के लिए करने का विचार किया जा रहा है।

➢ **कैपिटल गेन पर कर में छूट** – स्टार्टअप्स में निवेश को बढ़ावा देने के लिए सरकार उनको कैपिटल गेन में छूट देगी जिनको वर्ष के दौरान पूंजीगत लाभ हुआ है और जिन्होंनें सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त फंड ऑफ फंड्स में इस तरह के पूंजीगत लाभ का निवेश किया है ।

➢ **स्टार्टअप्स को तीन वर्ष के लिए टैक्स छूट** – भारत में स्टार्टअप्स की कार्यशील पूंजी आवश्यकता को संबोधित करने, विकास को प्रोत्साहित करने और उन्हें एक प्रतियोगी मंच प्रदान करने के लिए स्टार्टअप्स के मुनाफे को 3 वर्ष की अवधि के लिए कर से मुक्त रखा जाएगा।

➢ **उचित बाजार मूल्य पर निवेश में टैक्स छूट** – स्टार्टअप्स में इन्क्यूबेटरों द्वारा निवेश पर निवेश कर से मुक्त रखा जाएगा।

उद्योग–एकेडेमिया भागीदारी और उद्भवन

➢ **अभिनव नई खोज के प्रदर्शन एवं सहयोग मंच प्रदान करने के लिए स्टार्टअप उत्सवों का आयोजन** – भारत में स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत करने के लिए सरकार नें राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्टार्टअप उत्सव शुरू करने का प्रस्ताव किया है। यह संभावित निवेशकों, परामर्शदाताओं और साथी स्टार्टअप्स को सम्मिलित करते हुए एक व्यापक जन समुदाय के समक्ष उनके काम और विचारों का प्रदर्शन करने के लिए एक मंच होगा।

➢ **अटल अभिनव मिशन (एआईएम) का स्व रोजगार और प्रतिभा उपयोग (सेतु) प्रोग्राम के साथ लॉन्च** – यह विशेष रूप से प्रौद्योगिकी संचालित क्षेत्रों में विश्व स्तर के नवाचार हब, भव्य चुनौतियां, स्टार्टअप कारोबार और अन्य स्वरोजगार गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए एक मंच के रूप में काम करेगा।

➢ **इनक्यूबेटर सेटअप के लिए निजी क्षेत्र की विशेषज्ञता का उपयोग** – सरकार सार्वजनिक निजी भागीदारी में देश भर में इन्क्यूबेटरों की स्थापना के लिए एक नीति और ढांचे का निर्माण करेगा।

➢ **राष्ट्रीय संस्थानों में अभिनव कौं की स्थापना** – देश में अनुसंधान एवं विकास के प्रयासों में वृद्धि के लिए सरकार राष्ट्रीय संस्थानों में नवाचार और उद्यमिता के 31 केंनें की स्थापना करेगी। छात्रों द्वारा स्टार्टअप्स को प्रोत्साहित करने के लिए 13 केंनें को 50 लाख रुपये की वार्षिक वित्त सहायता 3 साल के लिए प्रदान की जायेगी।

➢ **आई आई टी मद्रास में स्थापित अनुसंधान पार्क की तर्ज पर 7 नये अनुसंधान पार्कों की स्थापना** – शिक्षाविदों और उद्योग के संयुक्त अनुसंधान एवं विकास के प्रयासों के माध्यम से सफल नवाचारों का विकास करने के लिए सरकार 100 करोड़ रुपये प्रति संस्थान के आरंभिक निवेश के साथ संस्थानों में 7 नए अनुसंधान पार्क की स्थापना करेगी। ये अनुसंधान पार्क आई आई टी मद्रास में स्थापित अनुसंधान पार्क की तर्ज पर होंगे।

➢ **जैव प्रौद्योगिकी सेक्टर में स्टार्टाअप्स को बढ़ावा देना** – भारत में जैव प्रौद्योगिकी क्षेत्र एक मजबूत विकास के पथ पर है। जैव प्रौद्योगिकी विभाग वर्ष 2020 तक 2000 स्टार्टाअप्स की स्थापना करने के लिए प्रति वर्ष करीब 300–500 नये स्टार्टअप्स की स्थापना के लिए प्रयासरत है।

➢ **छात्रों के लिए अभिनव केन्द्रित कार्यक्रमों की शुरुआत** – सरकार युवा छात्रों के बीच अनुसंधान और नवाचार को बढ़ावा देगी और इसके लिए कार्यक्रमों जैसे अभिनव कोर, निधि
(एक भव्य चुनौती कार्यक्रम), उच्चतर आविष्कार योजना आदि की शुरुआत की है। शुरुआत में ये योजनायें केवल आईआईटी के लिए लागू होंगी और प्रत्येक परियोजना 5 करोड़ रुपये तक की हो सकती है।

➢ **वार्षिक इनक्यूबेटर ग्रैंड चौलेंज**– इन्क्यूबेटर्स एक प्रभावी स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करने के लिए प्रारंभिक चरण में स्टार्टअप्स की पहचान करने और उन्हें अपने जीवन चक्र के विभिन्न चरणों में समर्थन देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सरकार पहले चरण में विश्व स्तर के इन्क्यूबेटरों के निर्माण की दिशा में निवेश करने का प्रस्ताव कर रही है। शुरुआती लक्ष्य ऐसे 10 इन्क्यूबेटरों की स्थापना करना है। इसके लिए सरकार विश्व स्तरीय बनने के लायक 10 संभावित इन्क्यूबेटरों की पहचान करेगी। इनमें से प्रत्येक को वित्तीय सहायता के रूप में 10 करोड़ रुपये दिये जायेंगे और ये इस तरह के अन्य इन्क्यूबेटरों के लिए संदर्भ मॉडल बनेंगे। इसके बाद इनको स्टार्टअप इंडिया पोर्टल पर प्रदर्शित किया जाएगा। ऐसे इन्क्यूबेटरों की पहचान के लिए ग्रैंड चौलेंज प्रतियोगिता आयोजित की जायेगी और इसे वार्षिक रुप से जारी रखा जाएगा।

श्री नरेंद्र मोदी ने 16 जनवरी, 2016 को स्टार्टअप इंडिया पहल की शुरुआत की। 19 कार्य बिंदुओं के साथ एक कार्य योजना, सरलीकरण और हैंड–होल्डिंग, वित्त पोषण सहायता और उद्योग अकादमिक साझेदारी और ऊष्मायन पर ध्यान केन्द्रित किया गया था। औद्योगिक नीति और संवर्धन विभाग उद्यमशीलता को प्रोत्साहित करने और नवाचार को बढ़ावा देने के लिए सक्रिय रूप से आवश्यक उपाय कर रहा है। स्टार्टअप इंडिया के तहत 14,600 से अधिक स्टार्टअप मान्यता प्राप्त हैं जो 479 जिलों में फैले हुए हैं, जिसमें सभी 29 राज्यों और 6 कें शासित प्रदेशों को विकास चरण प्रदान करने के लिए शामिल किया गया है।

स्टार्टअप्स को फंडिंग के लिए 10,000 करोड़ रुपये के फंड ऑफ फंड्स (एफएफएस) की स्थापना की गई है। यह नए भारत के निर्माण की दिशा में नवप्रवर्तनकर्ताओं और जोखिम लेने वालों का समर्थन कर रहा है। सरकार पहले ही एफएफएस के माध्यम से 32 वेंचर कैपिटल फंड के लिए 1,611.7 करोड़ रुपये की प्रतिबद्धता जता चुकी है। सरकार द्वारा योगदान किए गए फंड ने वीसी फंड को 7,000 करोड़ रुपये से अधिक की राशि जुटाने में सक्षम बनाया है जो स्टार्टअप्स के लिए उपलब्ध है। जब ये प्रतिबद्ध फंड अपनी फंड जुटाने की प्रक्रिया पूरी कर लेंगे, तो स्टार्टअप्स द्वारा उपयोग किए जाने के लिए कुल INR 13,888 करोड़ उपलब्ध होंगे। इस प्रकार, सरकार के योगदान ने स्टार्टअप्स के लिए 8 × फंडिंग को उत्प्रेरित किया है।

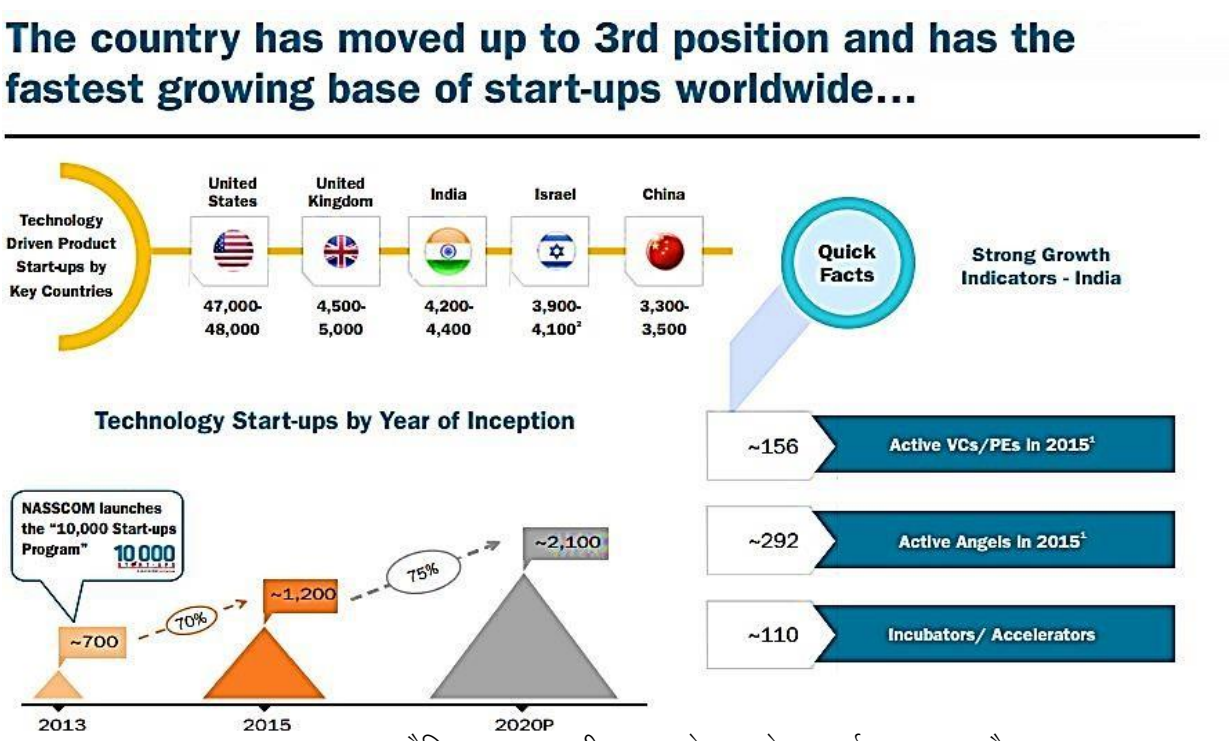

ग्राफ :1 – भारत वैश्विक स्तर पर तीसरा सबसे बडा टेक स्टार्ट–अप स्थान है

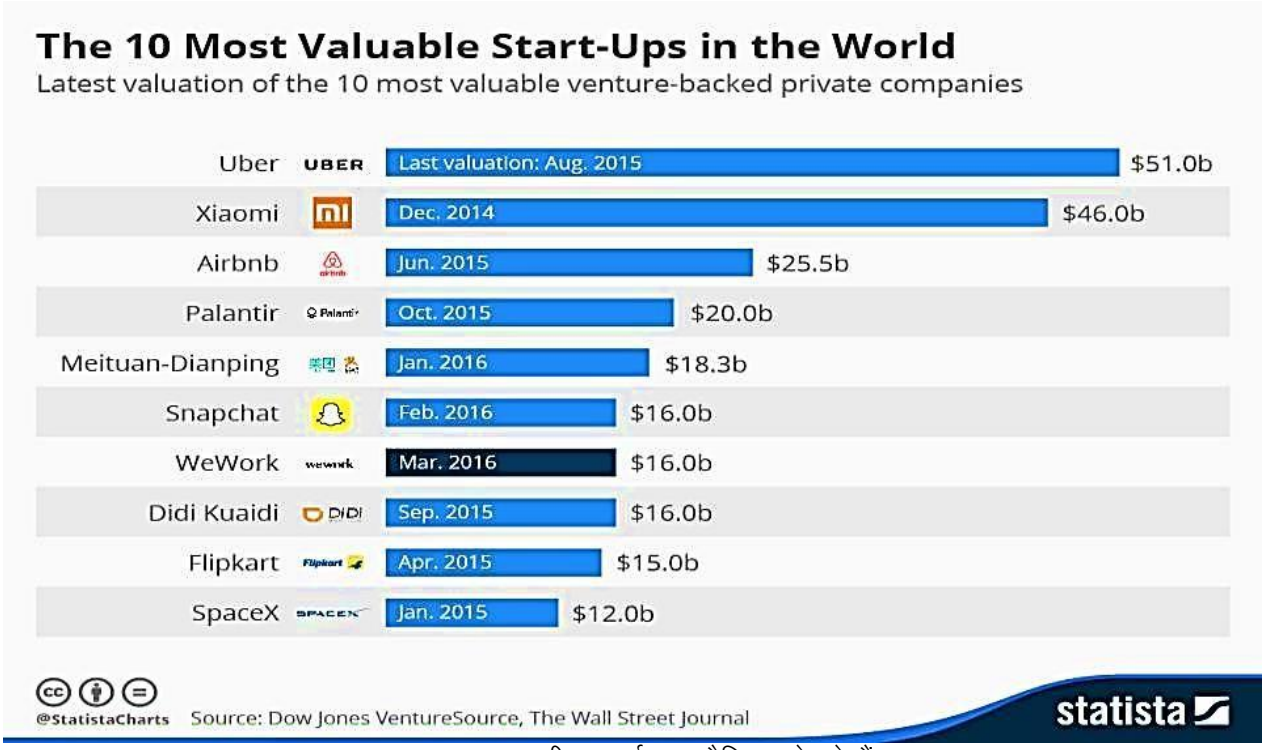

ग्राफ : 2– भारतीय स्टार्ट–अप वैश्विक हो रहे हैं

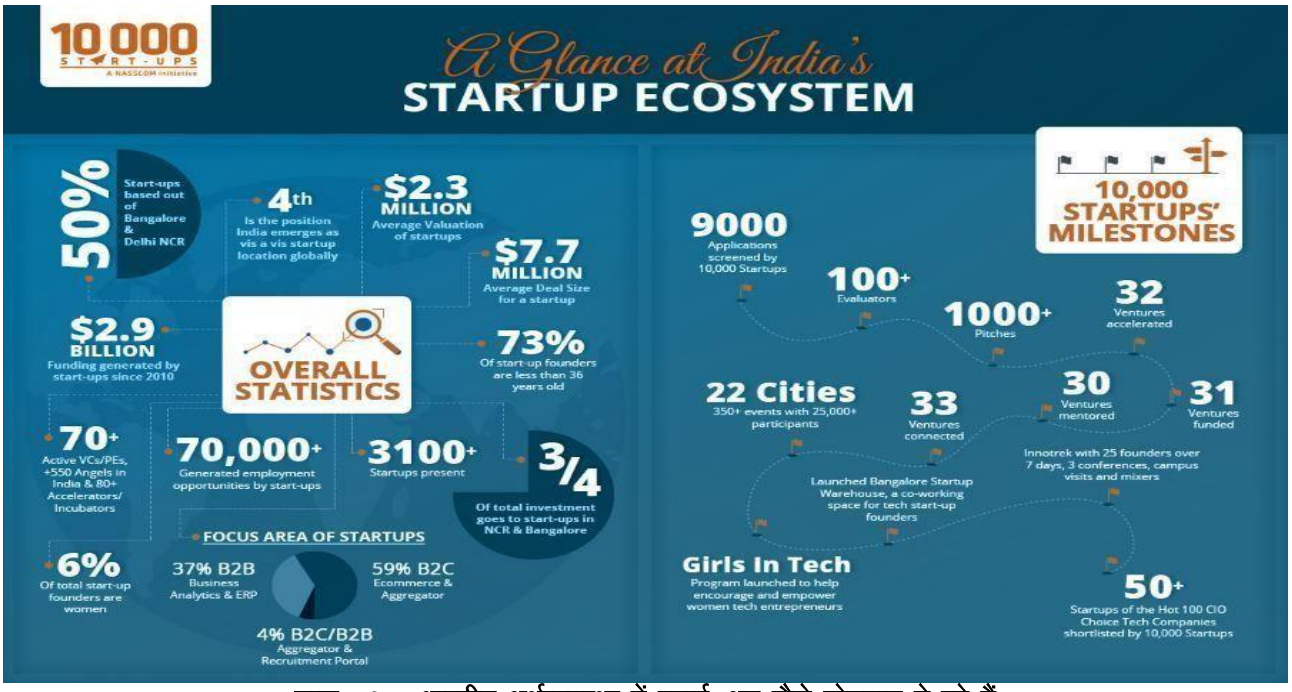

ग्राफ : 3 – भारतीय अर्थव्यवस्था में स्टार्ट–अप कैसे योगदान दे रहे हैं

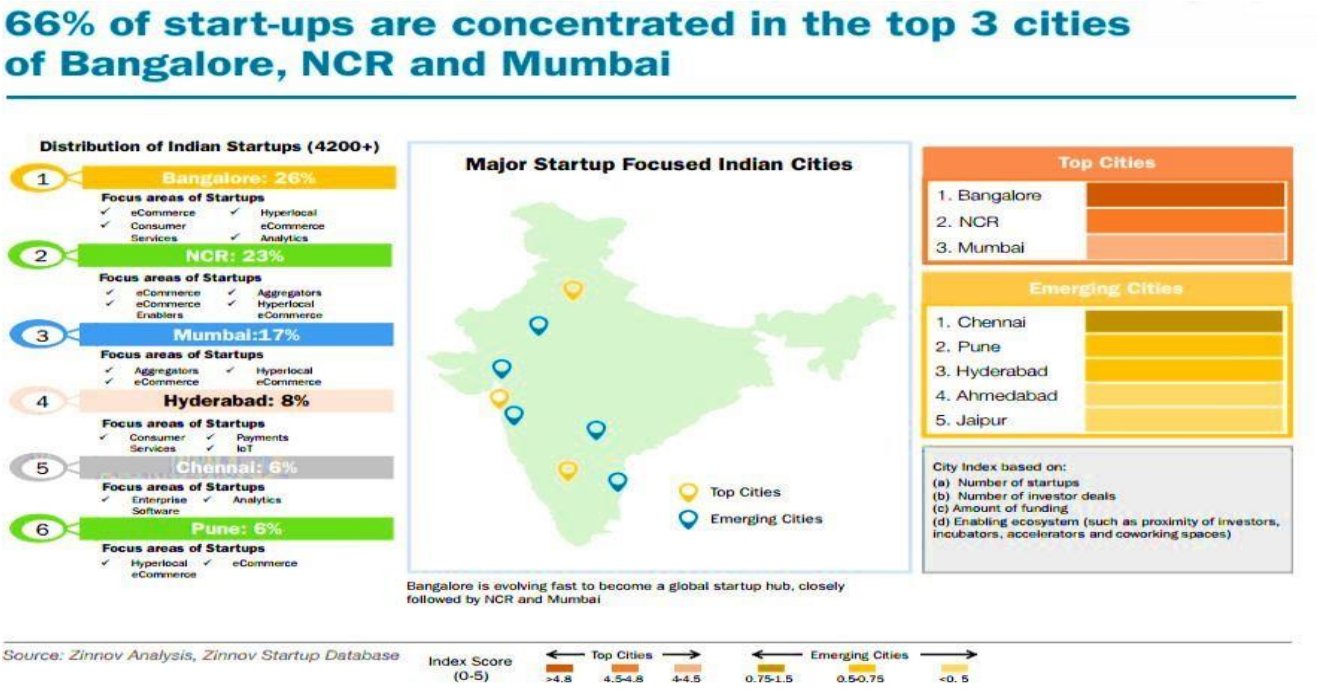

ग्राफ : 4 – शहरों में स्थित प्रमुख स्टार्ट–अप

आर्थिक विकास को बढ़ाने के लिए स्टार्ट अप की भूमिका

- **स्टार्टअप अधिक रोजगार सृजित करना :** अगर आप एंटरप्रेन्योर बनने जा रहे हैं तो आप ज्यादा रोजगार सृजित कर सकते हैं। इस प्रकार हमारे देश में बेरोजगारी की दर भी कम हो जाती है। इसलिए रोजगार सृजन स्टार्टअप्स के मुख्य लाभों में से एक है
- **धन का सृजन :** चूंकि उद्यमी अपने स्वयं के संसाधनों का निवेश करके निवेशकों को आकर्षित कर रहे हैं, इसलिए स्टार्टअप के बढ़ने पर देश के लोगों को लाभ मिलेगा। चूंकि पैसा समाज के साथ बांट रहा है, राष्ट्र के भीतर धन पैदा हो रहा है।
- **बेहतर जीवन स्तर :** स्टार्टअप लोगों के जीवन को बेहतर बनाने के लिए नवाचारों और प्रौद्योगिकियों को लागू कर सकते हैं। ऐसे कई स्टार्टअप हैं जो ग्रामीण क्षेत्रों में समुदाय के विकास के लिए काम कर रहे हैं।
- **सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि :** जीडीपी (सकल घरेलू उत्पाद) किसी देश के आर्थिक विकास को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। विश्व बैंक का कहना है कि भारत दुनिया में आर्थिक विकास के रूप में सबसे तेजी से बढ़ने वाला देश बन जाएगा। अधिक स्टार्टअप्स को समर्थन और प्रोत्साहन देकर, घरेलू स्तर पर अधिक राजस्व उत्पन्न करना संभव है और उपभोक्ता की पूंजी भी भारतीय अर्थव्यवस्था के चारों ओर प्रवाहित होगी।

पूर्व साहित्य की समीक्षा :

अरिहंत जैन ''भारतीय अर्थव्यवस्था को बहाल करने वाले स्टार्टअप – भारतीय अर्थव्यवस्था पर स्टार्टअप के प्रभाव पर एक अध्ययन'' श्री राम

कॉलेज ऑफ कॉमर्स का एक छात्र पत्रिका, खंड –2, अंक –1, 2017–18
यह पेपर वर्तमान स्टार्टअप वातावरण को रखने के लिए रुचि के मूलभूत बिंदु देता है जिसमें भारतीय सेटिंग के अंदर अभिनव है और विभिन्न राष्ट्रों और राज्यों की नीतियों के विपरीत नीतियों के विपरीत आज भारत का सामना करने वाली संबंधित कठिनाइयों का हिस्सा है, यह पता लगाने के लिए कि कौन सा टी सबसे सकारात्मक है और दर्शाता है स्टार्टअप के नवाचार और पारिस्थितिकी तंत्र की दिशा में भारत की विधायिका द्वारा किए गए प्रयास। शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य जीडीपी और पंजीकृत स्टार्टअप के बीच संबंध स्थापित करना, राज्यों और देशों में तुलना करना, विभिन्न योजनाओं की प्रभावशीलता को मापना है। यह पाया गया है कि स्टार्टअप इंडिया कार्यक्रम विकास की दिशा में एक बड़ा कदम है क्योंकि यह प्रभावी पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण की अधिकांश प्रमुख कठिनाइयों की ओर जाता है। नीति बनाई जाती है लेकिन सफलता उसके क्रियान्वयन पर निर्भर करती है। नए नीतिगत सुधार मजबूत विकास की इच्छा को दर्शाते हैं और युवाओं के उत्साह और उत्साह के साथ प्रतिध्वनित होते हैं।

मीनाक्षी बिंदल, भुवन गुप्ता, स्वीटी दुबे ''भारतीय अर्थव्यवस्था पर स्टार्टअप की भूमिका'' इंजीनियरिंग और प्रबंधन अनुसंधान के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, आईएसएसएन 9 ऑनलाइन) : 2250– 0758, आईएसएसएन (प्रिंट) – 2394–6962, खंड –8, अंक –5, अक्टूबर –2018
मुख्य उद्देश्य स्टार्टअप इंडिया के लिए पहल का विश्लेषण करना, स्टार्टअप के सामने आने वाली समस्याओं को समझना, लोगों पर स्टार्टअप के प्रभाव का अध्ययन करना, स्टार्टअप के बारे में जागरूकता का अध्ययन करना है। यह द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है। यह पाया गया है कि सरकार को न केवल भारत में बल्कि पूरे विश्व में स्टार्टअप्स को खुद को बढ़ावा देने में मदद करनी चाहिए, साथ ही ऐसी नीतियां भी बनानी चाहिए जो स्टार्टअप के अनुकूल हों ताकि भारतीय स्टार्टअप को एक बड़ा बढ़ावा मिले और वे और बेहतर रोजगार पैदा कर सकें।
हैंस वेस्टलंड ''आर्थिक उद्यमिता, स्टार्टअप और स्थानीय विकास पर उनके प्रभाव : स्वीडन का मामला'' ईआरएसए सम्मेलन पत्र मतें 11 च 327, यूरोपीय क्षेत्रीय विज्ञान संघ, 2011
वर्तमान अनुभवजन्य उद्यमिता साहित्य मुख्य रूप से उद्यमिता (स्टार्टअप की संख्या के रूप में मापा जाता है) और आर्थिक विकास के बीच एक सकारात्मक संबंध दर्शाता है। हालांकि, जिन तंत्रों द्वारा उद्यमिता अपना सकारात्मक प्रभाव डालती है, वे स्पष्ट नहीं हैं। रोजगार या सकल घरेलू उत्पाद पर स्टार्टअप का शुद्ध परिणाम कम से कम अल्पावधि में नकारात्मक हो सकता है, क्योंकि कुशल, नई कंपनियां कम कुशल लोगों को बंद कर सकती हैं। इस धारणा के आधार पर कि स्टार्टअप के रूप में आर्थिक उद्यमिता फर्म स्तर (फ्रिट्च एंड म्यूएलर 2004) और सामुदायिक स्तर पर उद्यमशील सामाजिक पूंजी (वेस्टलंड और बोल्टन 2003) पर बिना देखे गए आपूर्ति दुष्प्रभाव पैदा करती है, यह पेपर स्टार्टअप और स्थानीय विकास के बीच संबंधों का अध्ययन करता है। 2000 और 2008 के बीच स्वीडन में नगरपालिका स्तर पर। हम न केवल कुल स्टार्टअप सहित एक अद्वितीय डेटाबेस का उपयोग करते हैं, बल्कि जनसंख्या और रोजगार वृद्धि पर उद्यमिता के प्रभाव का अध्ययन करने के लिए छह शाखाओं में विभाजित स्टार्टअप पर डेटा का उपयोग करते हैं। विश्लेषण सभी नगर पालिकाओं के साथ–साथ नगर पालिका प्रकार और विकास दर द्वारा किया जाता है।

अध्ययन का उद्देश्य :
अध्ययन का उद्देश्य भारतीय अर्थव्यवस्था के विभिन्न चरों पर स्टार्टअप्स के प्रभाव का अध्ययन करना, स्टार्टअप्स की पहल का विश्लेषण करने के लिए जीडीपी, जीएनआई, भुगतान संतुलन, आयात, निर्यात, विदेशी रिजर्व पर स्टार्टअप के प्रभाव का विश्लेषण करना है।
अनुसंधान पद्धति स्वतंत्र चर : स्टार्टअप
आश्रित चर : जीडीपी, जीएनआई, आयात, निर्यात, भुगतान संतुलन, विदेशी रिजर्व, प्रति व्यक्ति
जीडीपी।
अनुसन्धान रेखा – चित्र
अनुसंधान डिजाइन तीन प्रकार के होते हैं –

- खोजपूर्ण अनुसंधान डिजाइन
- वर्णनात्मक अनुसंधान डिजाइन
- कारण अनुसंधान डिजाइन

डेटा के स्रोत : डेटा दो प्रकार के होते हैं :–
प्राथमिक डेटा और द्वितीयक डेटा। इस शोध में मैंने अध्ययन के लिए द्वितीयक आँकड़े लिए हैं। **डेटा संग्रह उपकरण :** मैंने अध्ययन के लिए भारतीय रिजर्व बैंक की रिपोर्ट, शोध प्रकाशन, समाचार पत्र, डीआईपीपी की रिपोर्ट आदि का उपयोग किया है।
जनसंख्या :
पंजीकृत स्टार्टअप के सभी वर्ष के डेटा और भारतीय अर्थव्यवस्था डेटा।
समंक संकलन : मैंने 2016 से 2019 तक नमूना आकार के रूप में 4 साल लिए हैं, क्योंकि स्टार्टअप भारतीय पहल 2016 से लागू की गई है। मैंने कुल संख्या का उपयोग किया है। डीआईपीपी रिपोर्ट से पंजीकृत स्टार्टअप डेटा और आरबीआई रिपोर्ट से आर्थिक चर डेटा। मैंने विश्लेषण के लिए मान्यता प्राप्त स्टार्टअप का इस्तेमाल किया है।

5. डेटा विश्लेषण और व्याख्या :–
मौजूदा कीमत पर जीडीपी पर स्टार्टअप्स का प्रभाव
तालिका : 1– वर्तमान मूल्य पर स्टार्टअप और जीडीपी की संख्या :–

Year	No. of startups recognized by DIPP	GDP at current price (Rs in cr.)
2016	503	13771874
2017	5373	15362386
2018	8724	17095005

2019	17390	19010164

परिणाम – correlation between no. of start-ups and GDP at current price =0.98608

व्याख्या :– पंजीकृत स्टार्टअप की संख्या और वर्तमान मूल्य पर जीएनआई के बीच सह–संबंध गुणांक की गणना से स्पष्ट है कि पंजीकृत स्टार्टअप की संख्या और वर्तमान मूल्य पर जीएनआई के बीच सकारात्मक सह–संबंध है। इसका मतलब है कि स्टार्टअप भारतीय अर्थव्यवस्था के जीएनआई को बढ़ाने में मदद करते हैं।

मौजूदा कीमत पर जीएनआई पर स्टार्टअप्स का प्रभाव।

तालिका : 2 – वर्तमान मूल्य पर स्टार्टअप और जीएनआई की संख्या

Year	No. of startups recognized by DIPP	Gross national income at current price (in cr.)
2016	503	13612095
2017	5373	15185986
2018	8724	16910192
2019	17390	18816538

***Result: correlation between no. of start-ups and GNI at current price* =0.986173**

व्याख्या :– पंजीकृत स्टार्टअप की संख्या और मौजूदा कीमत पर जीडीपी के बीच सह–संबंध गुणांक की गणना से स्पष्ट है कि पंजीकृत स्टार्टअप की संख्या और मौजूदा कीमत पर जीडीपी के बीच सकारात्मक सह–संबंध है। इसका मतलब है कि स्टार्टअप भारतीय अर्थव्यवस्था की जीडीपी को बढ़ाने में मदद करते हैं।

प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद पर स्टार्टअप का प्रभाव (रुपये)

तालिका : 3– स्टार्टअप की संख्या और प्रति व्यक्ति जीडीपी (रु.)

Year	Number of startups recognized by DIPP	Per capita GDP (RS.)
2016	503	107341
2017	5373	118263
2018	8724	129901
2019	17390	142719

***Result: correlation between number of start-ups And per capita GDP* =0.985636**

व्याख्या :– पंजीकृत स्टार्टअप की संख्या और प्रति व्यक्ति जीडीपी के बीच सह–संबंध गुणांक की गणना से स्पष्ट है कि पंजीकृत स्टार्टअप की संख्या और प्रति व्यक्ति जीडीपी के बीच सकारात्मक सह–संबंध है। इसका मतलब है कि स्टार्टअप भारतीय अर्थव्यवस्था की प्रति व्यक्ति जीडीपी बढ़ाने में मदद करते हैं।

निर्यात पर स्टार्टअप का प्रभाव

तालिका : 4– स्टार्टअप और निर्यात की संख्या

Year	Number of startups recognized by DIPP	Exports in RS. crore
2016	503	1716384
2017	5373	1849434
2018	8724	1956515
2019	17390	2307663

Result: correlation between number of start-ups and exports =0.995208

व्याख्या :– मैंने पंजीकृत स्टार्टअप और निर्यात की संख्या के बीच सह–संबंध गुणांक की गणना से स्पष्ट है कि पंजीकृत स्टार्टअप की संख्या और निर्यात के बीच सकारात्मक सह–संबंध है। इसका मतलब है कि स्टार्टअप भारतीय अर्थव्यवस्था के निर्यात को बढ़ाने में मदद करते हैं

मौजूदा कीमत पर जीडीपी पर स्टार्टअप्स का प्रभाव

तालिका : 5– स्टार्टअप और आयात की संख्या

Year	Number of startups recognized by DIPP	Imports in RS. crore
2016	503	2490306
2017	5373	2577675
2018	8724	3001033
2019	17390	3594373

Result: correlation between number of start-ups and imports=0.976658

व्याख्या :– मैंने पंजीकृत स्टार्टअप और आयात की संख्या के बीच सह–संबंध गुणांक की गणना से स्पष्ट है कि पंजीकृत स्टार्टअप की संख्या और आयात के बीच सकारात्मक सह–संबंध है। इसका मतलब है कि स्टार्टअप भारतीय अर्थव्यवस्था का आयात बढ़ा रहे हैं। यह

संभव नहीं है कि स्टार्टअप आयात बढ़ाएँ। यहां स्टार्टअप भारतीय अर्थव्यवस्था के आयात को कम करने में मदद नहीं कर रहा है। स्टार्टअप और आयात के बीच नकारात्मक सह–संबंध होना चाहिए।

भुगतान संतुलन पर स्टार्टअप का प्रभावः

तालिका : 6–स्टार्टअप की संख्या और भुगतान संतुलन

Year	Number of startups recognized by DIPP	Balance of payment Rs. in crore
2016	503	115830
2017	5373	144234
2018	8724	280816
2019	17390	-20204

Result: correlation between number of start-ups and balance of payment = -0.46784388

व्याख्या : पंजीकृत स्टार्टअप की संख्या और भुगतान संतुलन के बीच सह–संबंध गुणांक की गणना से स्पष्ट है कि पंजीकृत स्टार्टअप की संख्या और के बीच नकारात्मक सह–संबंध है। भुगतान देय। स्टार्टअप भारतीय अर्थव्यवस्था के भुगतान संतुलन को सुधारने में सहायक नहीं हैं।

विदेशी मुद्रा भंडार पर स्टार्टअप का प्रभाव

तालिका : 7– स्टार्टअप और विदेशी मुद्रा भंडार की संख्या

Year	Number of startups recognized by DIPP	Foreign exchange reserve in US million
2016	503	31891
2017	5373	43224
2018	8724	52401
2019	17390	30094

Result: correlation between number of start-ups and foreign exchange reserve= -0.14246

व्याख्या : पंजीकृत स्टार्टअप की संख्या और विदेशी मुद्रा भंडार के बीच सह–संबंध गुणांक की गणना की गई है। जिससे स्पष्ट है कि पंजीकृत स्टार्टअप की संख्या और विदेशी मुद्रा भंडार के बीच नकारात्मक सह–संबंध है। स्टार्टअप और विदेशी मुद्रा भंडार के बीच सकारात्मक सह–संबंध होना चाहिए। स्टार्टअप भारतीय अर्थव्यवस्था के विदेशी मुद्रा भंडार को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर रहे हैं।

परिणाम :–

तालिका : 8 – स्टार्टअप और भारतीय अर्थव्यवस्था के विभिन्न चर के बीच संबंध

VARIABLES OF INDIAN ECONOMY	CO-RELATION	RESULT	IMPACT
GDP AT CURRENT PRICE	0.986089	Positive co-relation	Positive
GNI AT CURRENT PRICE	0.986173	Positive co-relation	Positive
PER CAPITA GDP	0.985636	Positive co-relation	Positive
EXPORT	0.995208	Positive co-relation	Positive
IMPORT	0.976658	Positive co-relation	Negative
FOREIGN RESERVE	-0.14246	Negative co-relation	Negative
BALANCE OF PAYMENT	-0.46784388	Negative co-relation	Negative

यह पाया गया है कि वहां स्टार्टअप जीडीपी, जीएनआई, प्रति व्यक्ति जीडीपी, निर्यात पर सकारात्मक प्रभाव डाल रहे हैं। लेकिन स्टार्टअप आयात, विदेशी मुद्रा भंडार और भुगतान संतुलन को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर रहे हैं। संक्षेप में स्टार्टअप भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास पर सकारात्मक प्रभाव डाल रहे हैं, लेकिन यह भुगतान संतुलन को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर रहा है।

निष्कर्ष

स्टार्टअप दुनिया को बदल सकते हैं और आने वाले वर्षों में अधिक से अधिक स्टार्टअप नवाचार और रचनात्मकता के साथ विकसित होंगे। उद्यमिता ही एक राष्ट्र के आर्थिक विकास को बढ़ाने का एकमात्र तरीका है। और एक छोटे से विचार को बड़ा अभिनव समाधान कहा जा सकता है जो आपका भविष्य बदल सकता है। इसलिए यदि आपके पास कोई विचार है, तो असफलता और जोखिम लेने के डर से अपने सपनों को अवरुद्ध न करें। अपने विचार को स्टार्टअप में विकसित करें और हमारे देश के विकास में योगदान दें। अब हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि किसी राष्ट्र के आर्थिक विकास के लिए स्टार्टअप महत्वपूर्ण हैं। हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि स्टार्टअप भारतीय अर्थव्यवस्था पर सकारात्मक प्रभाव डाल रहे हैं। हालाँकि सरकार को भारत में अधिक स्टार्टअप को बढ़ावा देने और बनाने की आवश्यकता है ताकि यह भारत के सकल घरेलू उत्पाद को बढ़ाने में मदद करे। क्योंकि, वर्तमान में भारत की जीडीपी बहुत कम है और विदेशी रिजर्व भी। सरकार लोगों को व्यवसाय शुरू करने के लिए प्रोत्साहित कर रही है और इसके लिए क्या कदम उठाए जा रहे हैं जो वास्तव में भारत के स्टार्टअप उद्योग के उज्ज्वल भविष्य के लिए अच्छा है और यह निश्चित रूप से आगामी दशक में भारतीय अर्थव्यवस्था के साथ–साथ जीडीपी को भी बढ़ावा देगा।

8. सुझाव

- प्रत्येक राज्य के लिए स्टार्टअप नीति, स्टार्टअप पोर्टल स्थापित करके राज्य पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण।
- सरकार को स्टार्टअप्स के लिए और अधिक प्रोत्साहन प्रदान करना चाहिए।
- उद्यमशीलता की गतिविधि को बढ़ावा देने और अधिक नवीनता पैदा करने के लिए कार्यक्रम आयोजित करना।
- स्टार्टअप पहल के बारे में अधिक जागरूकता को बढ़ावा देना
- सरकार द्वारा घोषित नीतियों और प्रोत्साहनों का वास्तविक समय पर कार्यान्वयन।
- उन स्टार्टअप्स को बढ़ावा दें जो अपने उत्पाद को दूसरे देश में निर्यात कर रहे हैं।
- स्टार्टअप को बढ़ावा देना और अधिक प्रोत्साहन देना जो रोजगार के अधिक अवसर प्रदान कर रहे हैं।

सन्दर्भ

1. जैन अरिहंत (2017–18), भारतीय अर्थव्यवस्था को बहाल करने वाले स्टार्टअप? – भारतीय अर्थव्यवस्था पर स्टार्टअप के प्रभाव पर एक अध्ययन, श्री राम कॉलेज ऑफ कॉमर्स का एक छात्र पत्रिका, खंड–2, अंक–1।
2. बिंदल मीनाक्षी, गुप्ता भुवन, दुबे स्वीटी (2018)। भारतीय अर्थव्यवस्था पर स्टार्टअप की भूमिका इंजीनियरिंग और प्रबंधन अनुसंधान के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, आईएसएसएन (ऑनलाइन) : 2250–0758, आईएसएसएन (प्रिंट) – 2394–6962, खंड–8, अंक–5।
3. वेस टुंड हंस (2011), आर्थिक उद्यमिता, स्टार्टअप और स्थानीय विकास पर उनके प्रभाव– स्वीडन का मामला। ईआरएसए सम्मेलन पत्र मतें 11 च.327, यूरोपीय क्षेत्रीय विज्ञान संघ।
4. डॉ सुनीति चंडोक (2016), भारत दुनिया का सबसे तेजी से बढ़ता स्टार्टअप इकोसिस्टम : एक अध्ययन। एमिटी रिसर्च जर्नल ऑफ टूरिज्म, एविएशन एंड हॉस्पिटैलिटी वॉल्यूम 01, अंक 02।
5. डी. घोष और डी. अंशुल (2016), स्टार्ट–अप इंडिया का काम प्रगति पर है।
6. नैसकॉम (2015), NASSCOM स्टार्ट–अप इकोसिस्टम रिपोर्ट 2015 : भारत 4,200 से अधिक स्टार्टअप के साथ विश्व स्तर पर तीसरे स्थान पर है।